

दिन कंच काल न जा कि आ दिन क कि द का य दार्थ विय ॥ लफ ला
 या ॥ लखन हाय ॥ उ विय ॥ लान सिच के ॥ ना सिच के ॥ य ऊ मान न
 धियत को न हि च के धिय न ग का ला आ दिन मे वून ल हि च के ॥
 पू प दी प न य ॥ य ऊ नान न क म हा मूल ख ऊ न के ॥ ॥ वा के ॥
 ग ऊ नू य वाला हा ॥ अया दि ॥ ॥ म या च व मु प च्छा अं धा रु नी म य न
 म न के च के वा रु नी च व उ श्री क म ग व ध र्म ॥ पा द रु छ ॥ व मु च उ
 पान के म सो व नी ॥ क रु न रु द पा र्च व पान पा एक म ली ॥ उ का द म
 च क द म त लु ल का ऊ नानि व खान पा र्च व वि वि व प कानि मूर व सा

शास्त्र

ASIA-MUSEUM

1.387

घनं ॥ अमृक (गणपि) न यथ नाम स्वर्गलोकसंघातिकामना
 मरुवाक्यं यथुल्यमहं संप्रददं ॥ ॥ दक्षिणविय ॥ मुखसुः
 दिविय ॥ खलिकाविय ॥ नक ॥ ० ॥ ॥ निवया द्धवनं पिबुथ
 नवन ॥ पूवाकं १ ॥ काचनपु १ वजिपु १ कज मा ध साध निद्रू यं ॥
 मृग ॥ हास्य ॥ अरुत ॥ गाय पाताय ऊऊमका धूं ॥ पशुवासनया या
 गायहासं ॥ कृग हास्य आसनगया ॥ ॥ अमृक (गणपि) पुनूदं मयुथ
 मनुका दम कला भूद्धि पिबुसुनं उपतिष्ठतां ॥ कायना आपं ॥ पूर्व
 खयाकननं ॥ जीय ॥ ॐ सुव र्ववां न्यादि ॥ पिबुवास (गणपि)

नावाक्य ॥ अमृक (गणपि) पुनूदं मयुथ मनुका दम कना भूद्धि पिग
 नयथ नाम अनुगहं पिबुत भूउपतिष्ठतां ॥ ॥ उर्वतिलोदक ॥ व
 चन सिन्दूर यशोपवीतं पूषा पीतचूर्णलाजा रुल नेत्रं ॥ मय
 दीप ॥ ॐ देरुलपूषायादि ॥ ॥ सां ॥ ॐ चोत्र ऊमृखनिनय
 पिबुलोकनिवासिनं ॥ अथ नायायमाना नाम कथं उपतिष्ठतां ॥
 कलाप्रथमया लिखितं मकाद भूदिना ॥ द्विलिपासादि संपुथ
 उच्चकं पिबुमवय ॥ संपूर्ण सर्वरागानां सर्वानि सिद्धि कारणां
 नन पिबुस्वयादहं निबलाक महीयनं ॥ अरुत भूदि ॥ ॥ कगन

॥ जू मूक गण गति पि नु सा न वा सा ए व गु ॥ का प ना स थ दा व वा
य क ङ्का य ॥ ॥ थ ग धू न का व भा उ दू या व ङ्का व य ॥ ॥ त्रि न का
द भा हा वि धि ॥ ० ॥ ० ॥

18

॥ जू मूक गण म आ धि त वू ध दि न को न क र्म क नि त दा य भा य
थ य था य त्रि मि त तं दू न हि न ल्म म ग्नि दे व त य था ग ण य था ना
म ग र्म ल वा क्त ल य गु य म हं स प्र द द ॥ वा क् ॥ थ न वू वा न दू
ख वं न या गा कि ॥ ॥

अथ यथा ग्राह्य विधि ॥ ॥ आचार्य यच्छुन दनकू उप
धन ॥ विविक दग साजा के वाग्र को य ॥ खर्व दा वखा
सिस ॥ यदा स्वया वजा थूय ॥ धव नी या दान को प लायि
न ॥ भा उ स पा या न को प ला स ग य ॥ थ का प ग न के म
न व ॥ धव नी न व दान भा उ स पा या व ॥ खा को स्व स मा
उ दू य ॥ ॥ निव त्व आ य ॥ अरु ग द (ग) ग र्क स थ न ॥
थ म थ सा या व ॥ थ व ख व स की ल पा उ ॥ थ व ऊ व स ऊ ल

पा उ ॥ निव स लि व न य म धा ना पा उ ॥ निव या ऊ व ख व
स न ॥ ॥ ऊ ऊ ल पा उ ॥ द मा स न त्व या दी य ती ॥ ऊ
की ल पा उ ॥ द मा स न त्व या दी य ती ॥ ऊ य म धा ना पा उ
॥ द मा स न त्व या दी य ती ॥ ऊ ऊ ल पा उ नु सा र्घ पा उ
प रि पू र्ण ॥ ऊ की र पा उ नु सा र्घ पा उ प रि पू र्ण ॥ ऊ ॥
द नी ल ॥ द की र य म धा ना पा उ नु सा र्घ पा उ प रि पू
रु ॥ ॥ निव त्व पू जा या य ॥ ऊ हा ट के म्ब ना य रु गा

नायम्भमाननद्रा यथा विपत्तयः दमास नैवया
दीर्गा ॥ अत द्वाकन ॥ ऊलस्त्रानैवया दीयर्गा ॥ श्रीनस्त्र
ते ॥ पञ्चमस्तान ॥ पूनऊलस्त्रान ॥ चन्दन ॥ सिन्दूर ॥
यक्ष्मायवीत ॥ पूष्य ॥ रुलगाऊन ॥ पक्कान ॥ पृष्ठकानैव
द्य ॥ नैवद्या ॥ धूप ॥ दीप ॥ ॐ दंरुलपूष्यगाम्बूलधूप
दीप नैवद्यादि संकल्पसिद्धि नमु ॥ साय ॥ ॐ नमः
नागनाऊ ॥ पूजितं वैव सर्वदा ॥ यत काले च सर्वपूजः ॥

हाटकं श्वनमास्तुते ॥ ॐ यमाय धर्मनाजाय मृग्यः
कैवाक कायच ॥ वैवस्वनाय का नाय सर्वलोक क्रयाय
च ॥ उदुम्बकाय नीलाय दम्भाय यतमस्मिन् ॥ वृकाद
नाय त्रिगाय त्रिगुणफ नमास्तुते ॥ हाटकं श्वनदं वाय
निर्णय पूजापवायनः ॥ पाताल काकिनूपाय धर्ममोक्षः
यवेनमः ॥ हाटकं श्वनार्चनविश्वगत सर्वविधिपनिपु
र्तुमस्तु ॥ ॐ नमो हाटकं श्वनपूजा ॥ ॐ ॥

ॐ धर्मिणु ॥ ॐ ऊलपाय ॐ दमास न त्वया दीयतां ॥
ॐ कीनपाय ॐ दमास न त्वया दीयतां ॥ ॐ ऊलपाय ॐ सा
र्धपाय ॐ निपुण ॥ ॐ कीनपाय ॐ सार्धपाय ॐ निपुण ॥ ॥
प्रदवासन वाय ॥ गाय हात्र ॥ आनद दि न सा च कं रु ला
ल फे लाय ॥ ॥ ॐ पुथ म मूर्द्धादि स सिद्धा य गाय पु न पि
सु सु ॥ ॐ दमास न त्वया दीयतां ॥ ॥ पञ्चम म हामल
मास नय ॥ विष्णु काय वाच ॥ ॐ का क म न म स वा ॥

पञ्चम म वलि स्मृतां ॐ द पि सु त्वया द रुं म की यं म प
निपुतां ॥ ॐ पुथ म मूर्द्धादि स सिद्धा य गाय पु न पि सु सु
त्यल न रु पि सुं त म त्वया दीतां ॥ ल फे स पि सुं ॥ सि वि
क द सा म रु ग म भिनी स रिता न रु पि सुं त म त्वया दीय
तां ॥ ॥ तिला द क वाच ॥ ॐ पि रु तिला द का यो ॥ ति
ला द रुं स य नः ॥ म न पि सुं त्वया द रुं नि व ला कं स ग
कृति ॥ पुथ म मूर्द्धादि स सिद्धा य ता ना य पु न पि सु सु ॥

संस्कृत-शुद्धि-सूत्र ६३ २६ १९३३

संस्कृत-शुद्धि-सूत्र



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३३ ॥ ॥ ॥ ॥

मन्त्राष्टकम्



मिसाद कार्धस्वया दीयतां ॥ ॥ नवजलस्नान ॥ श्रीनस्ना
न ॥ पुनजलस्नान ॥ चन्दन ॥ सिन्दूर ॥ अक्षत ॥ यक्षपत्री
त ॥ पुष्प ॥ पीतवर्तु ॥ लाजा ॥ रुतेलाऊने ॥ पद्म ॥ पृष्ठ
कानेवडा ॥ नेवडा ॥ धूप ॥ दीप ॥ पुथममूर्द्धादि स सिद्धा पु
नायपुनपिनुस्त्रय ॥ दूरलपुष्पान्मूलधूपदीपरुल
नेवडादि स क सिद्धिनेमु ॥ ॥ सा ॥ ॥ पुनपिगत्र
नालिमाकार्धकर्म ॥ नपिब ॥ दम्भ ॥ न कर्म कर्म स्वर्ग

कृतिमानवः ॥ न क विगु ॥ नराव न हाट के म्व न म्वा गुणः ॥
नवपिनुस्त्रया दग्गिवला के सग कृति ॥ पुनपिनुमसः
वान्न पक्षमृतेन पुत्रिना ॥ गृह्णन् पुनत्रय नपिनुवः
वनमोश्मुत ॥ पुनपिनुस्त्रय न वि ॥ न त्सर्व विधिप विः
पुनमम्भु ॥ ॥ जलपागसर्व थूकावतिसिय ॥ पुथममूर्द्धा
दीदि स सिद्धा पुनायपुनपिनुस्त्रय जलाद कार्धस्वया
दीतां ॥ ॥ श्रीनयागसर्व थूकावतिसिय ॥ पुथममूर्द्धा

दिसे सिद्धाय गाय पुन पिनु सुख स्त्रीनादकार्घ्यत्वा
दीयतां ॥ ॥ जलपापसंक्षीनपापसंक्षीन न विन वधुका
वस्तुचाकु दायक ॥ वाक् ॥ ॐ यं क्वचित्पुनः पुनः वक्तु
न पि न वस्तुना ॥ न सर्वं नृपिनाया किं तिलाया मधु मि
थिना ॥ पिनु स वनिमिथो ॥ प्रथमं मूर्द्धादिसे सिद्धाय पु
नाय पुन पिनु सुख वस्तु द क्तत्वा दीयतां ॥ वक्तु पुन पिनु
सुख ॥ दिन दुपूषा न न ॥ अधी नय मग व ॥ जिह्व क्तु

जिह्व ॥ पिनु स क्तु न न ॥ प्रथमं मूर्द्धादिसे सिद्धाय पुना
य पुन पिनु सुख वस्तु दीयतां ॥ क्तु न न ॥ ॥
पिनु आय क्तु वाक् ॥ ॐ पापाणि प ॥ लिपूना क्तु ना नि स
स ह्यपापा नि दि वीय या नि ॥ पुन नि क्तु ना ला ऊल विन्दु
पापे ला गी न थी ल स न र्ण पु या या नि ॥ ॥ थ न धून का
व ॥ स्वाथ हा या व मा उ क्तु य ॥ द्विथं मथ थं क्तु ना ॥ ॥
थ न लि स ति क्तु या वाक् ॥ ॥ द्वितीय मुखनासिका

दि सं सिद्धा ॥ २ ॥ शृंगीय चक्र (ग्या) शादि सं सिद्धा ॥ ३ ॥ च
 उ र्थ वा दू द्र्या गुलि सं सिद्धा ॥ ४ ॥ पञ्चम द्वादि ना हिः
 लि मा दि सं सिद्धा ॥ ५ ॥ षष्ठम पाद द्र्या गुलि सं सिद्धा ॥
 ६ ॥ सप्तम स्रग मा स्रया य सं सिद्धा ॥ ७ ॥ अष्टम च व
 ला मा दि सं सिद्धा ॥ ८ ॥ नवम सर्वा द्रि सं सिद्धा ॥ ९ ॥
 दशम कृत्ति पा सा दि सं सिद्धा ॥ १० ॥ ॥ ऊं कृता या
 व्या य व्या य वाक् ॥ सकल नां उ (चक्र) ॥ ॥ शिव या ह

वृ न ऊ व खे स च्छ वाक् ॥ ख व खे स च्छ वाक् ॥ य द्वा स
 न वा य ॥ ना य हा ल ॥ रु लाल फ ला य ॥ न पा त ॥ ॥
 ऊं का का य का क पि लु हं या नू द मा स न त्व या दी य ता
 ॥ ऊ व स ॥ ॥ ऊं ग्ना ना य ग्ना न पि लु हं या नू द मा स
 न त्व या दी य ता ॥ ख व स ॥ ल फ स जा त य वा क् ॥ ॥
 ऊं य म स य म दू त स वा य भा सि म हा म न ॥ स फ ऊ न्म
 रु ग पा र्थ व लि मृ दू नु वा य हा ॥ का का य का क पि लु

कार्धं स्वयादीयतां ॥ ॥ नुर्वंशनायम्भानवल्लिपिपुस्तु
आऊल्लोदकार्धं स्वयादीयतां ॥ ॥ दीनपागसवधुवयि
लुप्तिसिध ॥ काकायकाकपिपुस्तुआदीनादकार्धं स्वया
दीयतां ॥ ॥ नुर्वंशनायम्भानवल्लिपिपुस्तुआदीनादका
र्धं स्वयादीयतां ॥ ॥ नहिनं वधुवस्ववोकक्षयक ॥
कुंयकविशुतनूपलवर्कनैपितनस्तुता ॥ ॥ सर्वं रुफिम
यान्तिगिनाशामधूमिश्रिता ॥ काकवल्लिवस्वादकं स्वयादी

यतां ॥ ॥ नुर्वंशनायम्भानवल्लिपिपुस्तुआदीनादकार्धं स्वयादीयतां ॥ ॥
नहिनं गिसिध ॥ ॥ चरुकावकुपुपुपुत ॥ काकायकाकः
पिपुस्तुआदीनादकार्धं स्वयादीयतां ॥ ॥ नुर्वंशनायम्भानव
लिपिपुस्तुआदीनादकार्धं स्वयादीयतां ॥ ॥ अरुगन्नादि ॥ ॥
खायितासकाकपिपुस्तु ॥ चिनासम्भानवल्लिपिपुस्तु ॥ काख
नकखिचानक ॥ ॥ यतंधूनकोवखाथसास्यभाउदु
य ॥ लखखवाप्रगन ॥ ॥ भाउसयाकापठकीयनासग

मधवतीया दानकापलायिन॥ अथ धूनकाउा कवन॥ ॥
वनकं काकूया क्रिथंया (थं विभु (थ॥ लेख कापउ का गीया
वत॥ काउवकन थकलिविय॥ उदरुनयाय॥ अगिलिन
आउकूया॥ लसि (धन॥ संखाय॥ ॥ वेवमामगुनवाहिकन
भूयाकर्मया न संखायममाल॥ ॥ धारिरुलं वसिद्धाथेइ
वसिल (गमय॥ मूर्ति कामधूखालं वसफखानं समान॥
॥ अमल हा मुकाय॥ गमामूर्तिकान धूनकं॥ ॥ वसुइइ

नहाय॥ विय॥ लं ककायकं॥ ऊवयालं कवांगककायम
नव॥ अनिष संचम गव॥ वंगालिन अनिषयाय॥ ॥ काप
लासततालं खगया वसाय संगचिचिय सपाउयावक
॥ सूर्यलं लेख स्वयागुनकं॥ लेख स्वयागुनकायलं
मिसगयकं॥ वासुन कापावथियकं॥ इस्कनसाय॥ वासु
नलं कवनं कवन॥ ॥ दानसल स्वया॥ लेख वलिहान
निर्मकनयावकं॥ वनवति या ल्यावन पूव जाकं गय॥ म